वर्ण व्यवस्था का समाज और शिक्षा पर प्रभावः– गाँधी और अम्बेडकर के संदर्भ में।

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविधालय, धनबाद के स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग में पी.एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत।

शोध सारांशिका

शोध निदेशक

डॉ0 मनोज कुमार तिवारी
सहायक प्रध्यापक सिन्दरी कॉलेज, सिन्दरी
दर्शनशास्त्र विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल
विश्वविधालय, धनबाद (झारखण्ड)
मो0– 9470365849

शोध छात्रा

रश्मि कुमारी
दर्शनशास्त्र विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल
विश्वविधालय, धनबाद, (झारखण्ड)
मो0– 6201837859

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविधालय, धनबाद, (झारखण्ड)

1. परिचय (Introduction)

वर्ण व्यवस्था– वर्ण व्यवस्था वह व्यवस्था है जो मानव विशेष के लिए प्रयोग में किया जाता है। वर्ण की उत्पत्ति वरण या वरी धातु से उत्पन्न हुई है जिसका अर्थ होता है चुनना या वरण करना। वर्ण शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ है जो पूर्व वैदिक काल के समाज रचना की प्राथमिक स्वरूप को स्पष्ट करता है। ऋग्वेद में वर्ण का प्रयोग समाज के विभिन्न व्यवसाय चयन के अर्थ में प्रयोग हुआ है। ऋग्वेद के प्रारंभिक चरण में वर्ण व्यवस्था जैसी किसी भी बातों का उल्लेख नहीं मिलता है। उस समय सिर्फ दो ही वर्ण होते थे जो एक आर्य और दूसरा अनार्य (दस्यु) ।

ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में पहली बार चार वर्णों (ब्राह्मण, छत्रीय, वैश्य और शूद्र) की परिकल्पना विराट पुरुष के विभिन्न अंगों से की गई है।

ब्राह्मणोयस मुखमाशिदबाह राजन्यरू कृतः।

उरूतदास्य द्वेश्यरू पदभयो शुद्रवाजात।।[1]

यहां संपूर्ण वर्ण व्यवस्था एक विराट पुरुष के शरीर के रूप में कल्पित किया गया है जिसका लाक्षिण अर्थ लगाया गया है कि "उसके मुख भाग से ब्राह्मण, भुजाओं से राजन्य (छत्रिय), उरू भाग से वैश्य तथा पैरों से शूद्र उत्पन्न हुए है"। यह वर्ण व्यवस्था का प्राचीन विचार है। परंतु इस काल में भी वर्णों में जटिलता नही आई थी और वर्ण व्यवस्था जन्मजात न होकर कर्म पर आधारित होते थे।

उस समय एक ही परिवार के लोग कर्मो के अनुसार ब्राह्मण, छत्रिय , वैश्य और शूद्र भी होते थे। ऋग्वेद में एक स्थान पर एक ऋषि कहता है कि मैं कवि हूं। मेरे पिता वैद्य हैं तथा मेरी माता अन्न पीसने वाली हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि साधन भिन्न है परंतु सभी वर्ग धन की कामना करते हैं। इससे स्पष्ट है कि व्यवसाय अनुवांशिक नहीं थी तथा जाती व्यवस्था का जो संकीर्ण रूप हमें कालांतर में देखने को मिलता है उससे ऋग्वेद समाज निश्चय ही अछूता था।

उत्तरवैदिक काल के समय वर्णों में कठोरपन आने लगी थी और अब वर्ण 'जाति' के रूप में परिणत होने लगे थे। इसी काल में जाति प्रथा का प्रदुर्भाव हुआ लेकिन उतना कठोर नही था जितना सूत्र काल में देखने को मिलता हैं।

गाँधी जी ने स्वस्थ समाज की रचना करने के लिए शिक्षा की बहुलता पर ध्यान दिए है उन्होने कहा है– शोषण विहीन समाज की स्थापना करना। उसके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है।

वह शिक्षा की परिभाषा को देते हुए कहते है कि ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बालक और मुनष्य के शरीर मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चतुर्मुखी विकास''[2]

उपर्युक्त परिभाषा से मैं समझती हूँ कि गाँधी जी के अनुसार एक आदर्श मनुष्य वही होता है, जब वह शिक्षा के ज्ञान को चारों दिशाओं से समझ लेता है और उसे अपने अंर्तनिहित विकसित करने वह एक स्वस्थ समाज का निर्माण करता है।

डॉ0 भीमराव अंबेडकर ने कहा है कि भारत के प्रत्येक नागरीक को शिक्षित होना चाहिए क्योंकि भारतीय समाज के लिए एक सूत्र का कार्य करती है शिक्षा। उनका मानना है कि भौतिक जगत में प्रायः आगे बढ़ने के लिए शिक्षा एक साधन है और साथ ही साथ मनुष्य को बौद्धिक विकास की ओर आगे बढ़ाने में मदद भी करती है।

डॉ0 भीमराव अंबेडकर ने कहा है कि ''मैंने जिस प्रकार से शिक्षा प्राप्त की है आप भी प्राप्त कीजिए। शिक्षा के बिना समाज को सुधारने का कोई और चारा नहीं है। आपको याद रखना चाहिए कि कोई समाज तभी जागृत सुशिक्षित तथा स्वाभिमानी होगा और तभी उसका विकास होगा। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। शिक्षा के मार्ग सभी के लिए खुले होने चाहिए। किसी भी समाज की प्रगति उस समाज के बुद्धिमान, कर्मठ और उत्साही युवाओं पर निर्भर करती है।[3]

2. उपलब्ध शोध सामग्री की सूची एवं समीक्षा (Statement of the Problem)

1. डॉ0 एस.एल. सेठ, डॉ0 एस.के सचन डॉ0 दिनेश सिंह श्री वाई.एस. रावत भारत में नस्ल धर्म, इतिहास राजनीति और जाति व्यवस्था। इस पुस्तक में जाति व्यवस्था के इतिहास के बारे में उल्लेख है जिसमें जाति व्यवस्था उत्पन्न होने लगा लोगों में उंच और निच जाति संबंधि बातों का भेद होने लगा।

2. Mahadev Desai, Mahatma Gandhi an autobiography The story of any experiments with truth. इस पुस्तक में महात्मा गाँधी जी के जीवन के बारे में उल्लेख है जहाँ उन्हे Outcaste होने के कारण से कैसे अपनी जिन्दगी में संघर्ष करना पड़ा था।

3. मोहनदास करमचंद्र गाँधी ''वर्ण व्यवस्था'' नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद इस पुस्तक में महात्मा गाँधी जी के विचार समय के अनुसार बदलता गया और अंत में वह जाति संबंधी विचार की अवहेलना किए।

4. डॉ0 श्याम सिंह राशि श्री कैलाश चन्द्र सेठ श्रीमति भारती नरसिंहमन डॉ0 सुखवीर सिंह बाबा साहेब डॉ0 अंबेडकर संपूर्ण वाड़मय खंड 2, इस पुस्तक के अंदर संवैधानिक सुधार और आर्थिक समस्या को लेकर चिंतन किया गया जिसमें यह बताया गया है कि समाज में विभिन्न प्रकार के समूह के लोग निवास करते है जिन्हे मत के अधिकार और आर्थिक स्थिति किन बातों का उल्लेख है।

3. समस्या का विधान (State of the Art)

वर्ण व्यवस्था का शिक्षा और समाज पर प्रभाव होने से तात्पर्य यह है कि समाज में निहित इस व्यवस्था से लोगों में द्वेष की भावना उत्पन्न होती है जिससे एक सामान्य परिस्थिति नहीं बनती और शिक्षा में भी सामान्य अवधारणा नहीं हो पाती जिसके कारण छोटे–बच्चों के मन में बचपन से ही भेद–भाव की भावना समाहित रहती है। इसी भेद–भाव की भावना को लोगों के मन से खत्म करके मैं अपने शोध कार्य को सार्थक बना सकती हूँ।

4. शोध समस्या (Problem to be Investigated)

भारत एक विकासशील देश है जहाँ शिक्षा और समाज के लिए बराबरी की बात होती है परंतु वहीं दूसरी और प्राचीन समय (वैदिक काल) से चली आ रही वर्ण व्यवस्था से प्रभावित थी। इस व्यवस्था को दूर करने के लिए गाँधी और अंबेडकर के विचार महत्वपूर्ण है।

वर्तमान समय में वर्ण से उपर उठकर हमें एकता की ओर अपना ध्यान आकृष्ट करना पड़ेगा तभी हम समान रूप में बराबर और संगठित रहेंगे।

5. शोध का उद्देश्य (Objective of the Research)

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य है महात्मा गाँधी और डॉ0 भीमराव अंबेडकर के शिक्षा और समाज के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का दार्शनिक अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत गाँधी और अंबेडकर के शिक्षा और समाज से जुड़े सभी तथ्यों का विस्तृत एवं सारगर्भित अध्ययन करना है। इस शोध के अंतर्गत निम्न विषयों का समावेश कर अध्ययन किया जाएगा जिससे कि समाज में जो भी संगतियाँ है उसको दूर किया जा सकें।

शिक्षा क्या है?

I. शिक्षा का उद्देश्य क्या है?
II. भारत में प्राचीन से लेकर वर्तमान जीवन में शिक्षा का क्या प्रभाव पड़ा है।
III. राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा का क्या महत्व है?
IV. समाज का रूप कैसा है?
V. एक आदर्श समाज के लिए क्या–क्या घटक होने चाहिए।
VI. समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
VII. सामाजिक समानता के लिए गाँधी और अंबेडकर के त्रयी सिद्धांत (स्वतंत्रता समानता एवं बंधुत्व) का महत्व।
VIII. आधुनिक परिप्रेक्षय में गाँधी और अंबेडकर के शिक्षा और समाज के अर्थ एवं महत्व का अध्ययन।

6. परिकल्पना (Hypothesis)

वर्ण व्यवस्था ऋग्वैदिक काल से जो गुण और कर्म के अनुसार लोगों को कर्म करने का निर्देश देती थी। परंतु कालांतर में यह व्यवस्था गुण और कर्म के अनुसार नहीं बल्कि जन्म के अनुसार हो गई जिसके कारण समाज में भेद–भाव उत्पन्न होने के साथ लोगों में उँच और निम्न की भावना आने लगी और साथ ही साथ समाज और शिक्षा भी इससे प्रभावित होने लगा।

वर्तमान समय में वर्ण व्यवस्था जाति का रूप ले लिया है और यह व्यवस्था लोगों पर इतना हावी हो चुका है कि किसी को समझ में नहीं आता है कि नैतिक आचरण को अपनाकर परोपकार की भावना लाई जा सकती है। समाज में असमनताएँ उत्पन्न हुई जिसका समाज और शिक्षा पर प्रभाव पड़ा। इन विषम परिस्थितियों को देखते हुए मैं गाँधी और अंबेडकर के शिक्षा दर्शन या उनके विचारों का मंथन करके उनके विचारों से इन असमनताओं को दूर करने की कोशिश करूँगी जिससे एक आदर्श समाज की स्थापना हो सकें।

7. शोध प्रारूप एवं अध्ययन पद्धति (Research design and Methodology)

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए ऐतिहासिक, तुलनात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषात्मक एवं संवाद पद्धति सहायक होगी। ऐतिहासिक अध्ययन के क्रम में शिक्षा और समाज पर वर्ण व्यवस्था के प्रभाव से संक्षिप्त इतिहास पर प्रकाश डाला जायेगा। उनके शिक्षा और समाज को जानने के लिए हमें ऐतिहासिक पद्धति का सहारा लेना होगा।

महात्मा गाँधी और डॉ0 भीमराव अंबेडकर की वर्ण व्यवस्था को समझाने के लिए शिक्षा और समाज पर प्रभाव की समानताओं और असमानताओं का अध्ययन किया जाएगा। अतः प्रस्तावित शोध कार्य में तुलनात्मक पद्धति का भी सहारा लिया जाएगा।

अध्ययन से तथा प्राथमिक सूत्रों से प्राप्त जानकारी का विश्लेषण करते हुए निष्कर्ष तक पहुँचाने का काम किया जायेगा। अतः विश्लेषणात्मक पद्धति का सहारा लेना भी आवश्यक होगा। आवश्यकतानुसार गाँधी और अंबेडकर से जुड़े स्थानों पर जाकर साक्षात्कार के माध्यम से ऐतिहासिक संदर्भो को जानने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही वर्तमान संदर्भ को जानने के लिए विभिन्न संस्थानों का दौरा कर अध्ययन किया जाएगा।

इसके अलावा अभी तक की प्रकाशित पुस्तक के प्राथमिक एवं द्वितीय श्रोत सामग्री संकलन किया जाएगा।

8. तथ्य संकलन (Tools to be used in the collection of data and analysis)

मुझे अपना शोध कार्य को पूरा करने के लिए विभिन्न पुस्तके, पुस्तकालय एवं शोध संबंधी दस्तावेजों की जरूरत पड़ेगी जो प्राथमिक प्रदत्त के रूप में होगी। इसके अलावा शोध संबंधी संस्थाओं में जाकर लोगों से साक्षात्कार के माध्यम से द्वितीय प्रदत्त द्वारा अपने तथ्यों का संकलन करूँगी और साथ ही साथ अन्य विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों शोध संबंधी संस्थानों या शोध से संबंधित पत्रिकाओं का संकलन किया जाएगा।

9. शोध कार्य का महत्व एवं प्रासंगिकता (Significance of proposed work and relevance)

प्रस्तावित शोध कार्य कई दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। दर्शनशास्त्र की छात्रा होने के नाते मैं समझती हूँ कि सामाजिक अनुसंधान समाजिक विज्ञान का आधार होता है। शोध कार्य ज्ञान की दुनिया को विकसित करती है। नए तथ्य विचारों को उसमें संयोजित करती है। प्रामाणिक सामग्रियों की खोज होती है तथा विष्य वस्तु और अधिक संपन्न हो जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में यह जानने का प्रयास किया जाएगा कि शिक्षा और समाज का मानव के अस्तित्व के विकास में क्या भूमिका है? समाज में व्याप्त असमानता, अशिक्षा आदि की समस्याओं का क्या समाधान है? हम कैसे इन कुरितियों को दूर कर बेहतर समाज की निर्माण कर सकते है? इसके अतिरिक्त गाँधी और अंबेडकर की वर्ण व्यवस्था संबंधी विचारों की जानकारी प्रदान करना जिससे समाज को उनके विचारों के संदर्भ में तथ्यों की जानकारी आसानी से प्राप्त किया जा सकें। जिसके आधार पर भेद–भाव रहित समाज की स्थापना हो सकें।

10. वर्तमान ज्ञान में योगदान (Contribution to the existing knowledge)

वर्तमान समय में वर्ण व्यवस्था पर अत्यधिक कार्य हुए है जिससे विभिन्न मत प्रकाश में आये है। लॉ ज्ञानचन्द आर्य कहते है वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं बल्कि कर्म के आधार पर है। उन्होने ऋग्वेद के वर्ण व्यवस्था पर विचार करके यह स्पष्ट किए है, इसलिए उन्होने गुण और कर्म के अनुसार वर्ण विभाजन किया है। उन्होने यह भी कहा है कि स्मृतियों का वर्ण व्यवस्था दिक और काल की परिस्थिती को देखते हुए हुआ है जो ऋग्वेदिक काल के बिलकुल विपरीत है। स्मृतियों के वर्ण व्यवस्था गुण और कर्म के अनुसार नहीं बल्कि जन्म के अनुसार कहा गया है और यह आज इतना व्यापक रूप ले चुका है कि समाज में यह व्यवस्था छोटी–छोटी जातियों में तब्दील हो गया है।

11. शोध की सीमाएँ (Limitations of the Research Work)

शोध का विषय एवं समस्या चयन के बाद जहाँ तक संभव हो उसकी सीमा निर्धारण करना आवश्यक है ताकि तथ्यों के संकलन में भटकाव की संभावना कम हो। प्रस्तुत शोध में महात्मा गाँधी और भीमराव अंबेडकर की शिक्षा और समाज का विश्लेषण वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किया जाएगा। इसमें शिक्षा और समाज से संबंधित पुस्तकें सरकारी दस्तावेजों, पत्र पत्रिकाओं इत्यादि का अध्ययन शामिल किया जायेगा।

12. संभावित अध्याय (Tentative Chapterisation)

प्रथम अध्यायः— वर्ण व्यवस्था सामान्य विवरण।

द्वितीय अध्यायः— प्राचीन काल की शैक्षणिक और सामाजिक वयवस्था।

तृतीय अध्यायः— प्राचीन सामाजिक व्यवस्था पर महात्मा गाँधी के विचार।

चतुर्थ अध्यायः— प्राचीन सामाजिक व्यवस्था पर डॉ0 भीमराव अंबेडकर के विचार।

पंचम अध्यायः— प्राचीन शैक्षणिक व्यवस्था पर गाँधी के विचार।

षष्ट्म अध्यायः— प्राचीन शैक्षणिक व्यवस्था पर अंबेडकर के विचार।

सप्तम् अध्यायः— प्राचीन सामाजिक एवं शैक्षणिक व्यवस्था पर वर्तमान संदर्भ में गाँधी एवं अंबेडकर के तुल्नातमक अध्ययन।

उपसंहार।

13. कार्य योजना (Work Plan)

प्रस्तावित शोध कार्य को पूर्ण करन के लिए व्यवस्थित ढंग से समय एवं प्रबंधन की आवश्यकता होगी। समय एवं प्रबंधन की आवश्यकता होगी। समय प्रबंधन ही किसी भी शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण अंग होता है। शोध प्रबंध प्रस्तुति हेतु शोध कार्य को अनेक चरणों में विभाजित कर चरणबद्ध तरीके से विश्वविद्यालय विभाग निर्धारित समय में पूर्ण किया जाएगा।

- प्रथम चरण में शोध कार्य से संबंधित सामग्री या संचय का संग्रह किया जाएगा।
- द्वितीय चरण में प्रथम अध्याय का लेखन कार्य और विभिन्न विद्वतजनों से विचार विमर्श किया जाएगा।
- तृतीय चरण में द्वितीय एवं तृतीय अध्याय का लेखन कार्य किया जाएगा।
- चतुर्थ चरण में चतुर्थ व पंचम अध्याय का लेखन कार्य किया जाएगा।
- पंचम चरण में षष्टम और सप्तम अध्याय का लेखन कार्य तथा शोध प्रबंध का टंकण कार्य और समय पर शोध कार्य पूरा करने की कोशिश की जाएगी।

यथासमय विभागीय शोध परिषद (डी.आर.सी) विश्वविद्यालय के विद्वतजन, गुरूजन तथा विभिन्न महाविद्यालयों के अध्यापकगण से मार्गदर्शन प्राप्त करते हुए, शोध कार्य को गति प्राप्त करना और निर्धारित वर्ष के अंतर्गत शोध कार्य को पूर्ण करना हमारी कार्य योजना का महत्वपूर्ण हिस्सा होगा।

प्रथम अध्यायः— प्रथम अध्याय के अंतर्गत प्राचीन वर्ण व्यवस्था की सामान्य रूप रेखा के साथ उसकी कार्य निर्धारण और किस प्रकार से वर्ण का जाति में तब्दील होने की बातों का उल्लेख किया जाएगा। और विभिन्न ऋषि महर्षि ने वर्ण व्यवस्था पर जो विचार दिये है उन सब पर प्रकाश डाला जाएगा।

द्वितीय अध्यायः– इस अध्याय के अंतर्गत प्राचीन काल की शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था के बारे में उल्लेख करने के साथ यह स्पष्ट करना है कि वर्णों के अनुसार लोगों को किस प्रकार की शिक्षा प्राप्त हुई थी और उस समय समाज में इनके प्रति सोच क्या थी और खुद वह लोग अपने आप को किस नजरिए से देखा किया करते थे।

तृतीय अध्यायः– इस अध्याय में समाज के बारे में गांधी जी के कहे हुए बातों का विवरण किया जाएगा। उन्होंने लोगों को शोषण से मुक्त होने की बात कही है। उनका मानना था कि समाज की बुनियाद अहिंसा पर टिकी हुई है इसलिए वह हमेशा सत्य की राह पर चलने के लिए प्रेरित किया करते थे जिससे एक आदर्श समाज की स्थापना हो सकें।

चतुर्थ अध्यायः– इस अध्याय में डॉ भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक विचार की बातों का विवरण किया जाएगा। वह समाज को किस नजर से देखते थे उन बातों का भी उल्लेख करना है। उनका मत था कि समाज के सभी वर्गों का सभी क्षेत्रों में समान स्थान होने चाहिए और सभी वर्ग के लोगों को जीवन में उपर उठने के समान अवसर दिए जाएं।

पंचम अध्यायः– इस अध्याय में महात्मा गांधी ने प्राचीन शिक्षा व्यवस्था के बारे में जो बातें कहीं हैं उन्हीं बातों का उल्लेख किया जाएगा। गांधी जी ने शिक्षा के बारे में कहा है कि मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है और साथ ही साथ यह भी कहा है कि शिक्षा वह प्रणाली है जो मनुष्य को अच्छे बुरे कार्य को समझ कर नैतिक आचरण को प्राप्त कर सकती है।

षष्ठम अध्यायः– इस अध्याय में डॉ भीमराव अम्बेडकर ने शिक्षा के लिए जो विचार दिए हैं उन बातों का उल्लेख किया जाएगा। वह कहते है कि शिक्षा मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है, इसलिए वह कहते है क्योंकि ज्ञान के अभाव में कोई भी मनुष्य अन्य किसी को भी मुर्ख बना कर हानि पहुंचा सकता है।

सप्तम अध्यायः– इस अध्याय के अंतर्गत तुलनात्मक तरीके से महात्मा गांधी और डॉ भीमराव अम्बेडकर के शिक्षा और समाजिक बातों को प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगी। इन दोनों महापुरुषों में भिन्नता होते हुए भी वह एकता की बातों पर उनका मत होता है और यह हमेशा से मानव कल्याण के बारे में बातें किया करते थे। इन्हीं बातों का समन्वय कर एक मत लाने का प्रयास करूंगी।

उपसंहारः– अंतिम अध्याय में निष्कर्ष के रूप में सुझाव होगा। जिसके अंतर्गत वर्ण व्यवस्था से उत्पन्न भेद – भाव, जाति व्यवस्था आदि पूर्व कल्पनाओं पर आधृत मान्यताओं को दूर कर एक सामान्य शिक्षा और भेद–भाव रहित एक आदर्श समाज की स्थापना करना है।

14. संदर्भ (Reference)

1. ब्राह्मणोडस्य मुखमासीद् बाहु राजन्य कृतः।

   उरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्याम् शुद्रौ अजायत्।।

   ऋग्वेद (पुरूषसूक्त 10.90.12), श्रीवास्तव, कृष्ण चन्द्र, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, सोलहवां संस्करण यूनाइटेड बुक डिपों, इलाहाबाद, पृष्ठ सं0– 88

2. शिक्षा से मेरा अभिप्राय है ''बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चतुर्मुखी विकास''

   https://sarkariguider.in

3. वशिसष्ठ, डॉ0 अलका, डॉ0 भीमराव अंबेडकर की जीवनी, Sahitya sarowar original Black classic, पृष्ठ संख्या– 98

15. ग्रंथ सूची (Bibliography)

1. अम्बेडकर डॉ0 बाबा साहेब संपूर्ण वाङ्मय खण्ड –1, अरिहंत ऑफसेट, जनकपुरी, नई दिल्ली।
2. अम्बेडकर, डॉ0 बाबसाहेब सम्पूर्ण वाङ्मय, खण्ड– 13, शुद्र कौन थे, अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा0 लि0, W-30 ओखला फेज– 2, नई दिल्ली–20
3. अंबेडकर, डॉ0 भीमराव जाति का विनाश, द्वितीय संस्करण, कारवई प्रेस, नई दिल्ली।
4. आर्य, ला ज्ञानचन्द वर्ण व्यवस्था।
5. बाली, एल.आर अंबेडकर बनाम गाँधी, आनन्द साहित्य सदन।
6. बैचेन, डॉ0 श्यौराजसिंह, गाँधी हरिजन अंबेडकर जनता पहला संस्करण, सिद्धांत बुक्स दिल्ली।
7. Desai Mahadev, Mahatma Gandhi and autobiography. The story of my experiments with truth, Finger print classics, New Delhi.
8. गाँधी, मोहनदास करमचंद वर्ण व्यवस्था, प्रथम संस्करण अनुवादक रामनारायण 1948, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद।
9. जोगी, डॉ सुनिल दलित समाज के पितामह डॉ भीमराव अंबेडकर डायमंड पाकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
10. जी, गाँधी, मेरे सपनों का भारत, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, एन–77 पहली मंजिल, कनौट सर्कस नई दिल्ली 110001
11. लाल, बसंत कुमार, समकालीन भारतीय दर्शन, मोतिलाल बनारसीदास, अष्टम् पुनमुद्रण, दिल्ली 2013
12. मंत्री, गणेश, गाँधी और अंबेडकर, प्रभात प्रकाशन।
13. डॉ0 एस.एल. सेठ डॉ0 एस.के सचान, डॉ0 दिनेश सिंह बाई एस रावत, भारत में नस्ल, धर्म इतिहास, राजनीति और जाति व्यवस्था, प्रथम संस्करण सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली 2014
14. सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद, भारतीय दर्शन की रूपरेखा, मोतिलाल बनारसीदास,
15. श्रीवास्तव, कृष्ण चन्द्र प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति सोलहवॉ संस्करण यूनाईटेड बुक डिपों इलाहाबाद।
16. वशिष्ठ, डॉ0 अलका, डॉ0 भीमराव अंबेडकर की जीवनी, Sahitya Sarowar, Original Black Classic.